ब्रज लोक कला एवं शिल्प संग्रहालय

वृन्दावन-राधा कुण्ड मार्ग, बहुला वन, मथुरा-281004

BRAJ FOLK ART AND CRAFT MUSEUM

Vrindavan-Radha Kund Marg, Bahulavan,
Mathura-281004

लोक ही कला का आद्य अधिष्ठान है।

संचालित - श्री श्री नरहरि सेवा संस्थान, वृन्दावन

ब्रज लोक कला एवं शिल्प संग्रहालय

ब्रज भारतीय संस्कृति का प्रमुख केन्द्र बिन्दु है, यह जिन तत्वों से बना है, वह समूचे भारत का प्रतिनिधित्व करते हैं, यहाँ का अतीत गौ-पालन से प्रारम्भ होता है। पशु-पक्षी-वनस्पति एवं प्रकृति, इन सभी अवयवों का संकलन ब्रज का सौन्दर्य है। यहाँ समय-समय पर अनेक धर्म, सम्प्रदायों और जातियों का आवागमन होता रहा है, किन्तु यहाँ की मूल संस्कृति यथावत् बनी रही, वर्तमान युग अनेक क्रान्तियों के साथ इतनी त्वरित गति से परिवर्तन की ओर अग्रसरित हुआ है कि लोक संस्कृतियाँ लुप्त होने की स्थिति में पहुँच गई। इसी सोच और वैचारिकी से ब्रज संस्कृति की सुरक्षा-संरक्षा हेतु **ब्रजलोक कला एवं शिल्प संग्रहालय** का जन्म हुआ।

प्रमुख रूप से संस्थान ब्रज संस्कृति के वस्तु संकलन, हस्तलिखित ग्रंथों का संकलन तथा मौखिक परम्परा से प्राप्त अलिखित साहित्य का संकलन किया गया है। संस्थान द्वारा क्षेत्रीय मुक्ताकाशीय गैलरी का निर्माण करा कर दर्शकों के अवलोकनार्थ प्रस्तुत किया गया है। किसान के घर की प्राचीन चाकी, लुगदी से बने डला, लोक देवी एवं दीवाल पर छप्पर, छींका, खाट, रई व दूध विलौनी, धौनी आदि का प्रदर्शन पर्यटकों को आकर्षित कर रहा है।

श्री श्री नरहरि सेवा संस्थान ब्रज के साधु-सन्तों व महापुरूषों के वरदान का सुफल है। डॉ. उमेश चन्द्र शर्मा के मन में एक स्वप्न तैरता रहता था-ब्रज संस्कृति को विश्व संस्कृति से जोड़कर इसकी संभावनाओं का विस्तार किया जाये। इसकी चर्चा श्रीधाम वृन्दावन के तपोनिष्ठ साधु-सन्तों से करते-करते भावमग्न से हो जाते थे। श्री नरहरि दास जी महाराज की सन्निधि में 12 अगस्त 1982 को इस स्वप्न ने एक संकल्प का रूप धारण किया।

उस संकल्प का नाम था ''**ब्रज लोक कला एवं शिल्प संग्रहालय**'' इस संकल्प को क्रियान्वित करने के लिये ग्यारह वर्ष पर्यन्त अथक परिश्रम के साथ समूचे ब्रज का परिभ्रमण अध्येता-अन्वेषक की दृष्टि से किया गया, विविध ग्रंथागारों में आवश्यक अध्ययन तथा ब्रज व ब्रज के बाहर के अनेक विद्वानों से ब्रज संस्कृति और कला की सुरक्षा-संरक्षा व विकास के अनुशासनों पर चर्चा की गई, जिससे आशीर्वचन रूप में प्रोत्साहन और उचित परामर्श भी प्राप्त हुआ। ब्रज के बाहर के अनेक विद्वानों से ब्रज संस्कृति और कला की सुरक्षा-संरक्षा व विकास के अनुशासनों पर चर्चा की गई।

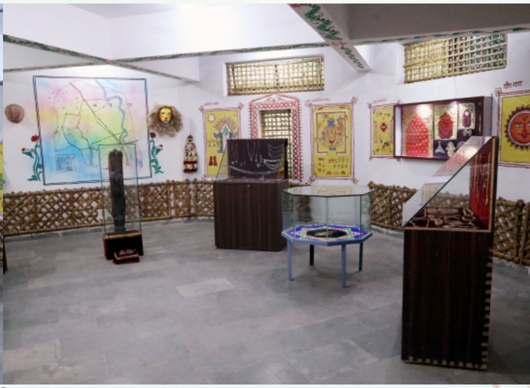

इसके प्रेरणा स्रोत और उत्साहवर्धन करने वाले विद्वानों में प्रज्ञा पुरूष डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल, लोक मनीषी डॉ. सत्येन्द्र, लोक ऋषि श्री देवेन्द्र सत्यार्थी, डॉ. राम नरेश त्रिपाठी आदि प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से स्मरणीय हैं। आधुनिक विद्वानों में डॉ. श्रीमती कपिला वात्सायन, डॉ. श्रीवत्स गोस्वामी, डॉ. शरण बिहारी गोस्वामी, डॉ. कल्याण कुमार चक्रवर्ती (I.A.S.), श्री ब्रज किशोर शर्मा, (I.A.S.), डॉ. कमल टावरी (I.A.S.), डॉ. ए. के. दास, डॉ. चन्द्रभान रावत, डॉ. कैलाश चन्द्र भाटिया, डॉ. हर्ष नन्दिनी भाटिया, डॉ. नीरू मिश्रा, प्रो. गोविन्द शर्मा, डॉ. नरेश चन्द्र बंसल, पद्मश्री राम स्वरुप शर्मा रासाचार्य, डॉ. श्रीभगवान शर्मा, विदेशी विद्वानों में डॉ. डेविड, डॉ. इमरे बंगा, डॉ. जैक हौले, डॉ. एलेन आदि महत् पुरूषों के आशीर्वाद से संकल्प को साकार रूप प्रदान करने हेतु 23 जुलाई 1993 को विधिवत् पंजीयन के साथ पुष्ट किया जा सका।

संग्रहालय में गोबर कला का प्रदर्शन

संस्थान द्वारा क्षेत्रीय अन्वेषण का कार्य विविध स्तरों पर चल रहा है। इसी संदर्भ में ब्रज क्षेत्र में अनुसंधान करने वालों को आवश्यक सुविधा प्रदान की जाती है। ब्रज की लोक कलायें संरक्षण के अभाव में बिखरी हुई सी प्रतीत होती हैं, उनको सतत् बनाये रखने के लिये रंगमंचीय कार्यक्रम की व्यवस्था की जाती है, जिसके द्वारा लोक नाट्य व अन्य रंग मंचीय विधाओं को पर्याप्त प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से संस्थान द्वारा ब्रज की लुप्त प्राय: हो रही कलाओं का प्रशिक्षण भी प्रारम्भ

मंदिर में प्रयुक्त पिछवाई व मुकुट श्रंगार

रासलीला में उपयोगी श्रंगार

किया जा रहा है। जिससे ब्रज की लोक कलायें जीवन्त होकर देश विदेश में अपनी प्रस्तुति से ब्रज संस्कृति का प्रसार कर सकें।

भारतीय संस्कृति का आधार ब्रज लोक संस्कृति को माना गया है, ब्रज लोक संस्कृति ने मानव सभ्यता में समय-समय पर आये बदलाव का प्रतिनिधित्व भी किया है, जिसमें मनुष्य ने रहन-सहन, खान-पान, बस्त्र-विन्यास आदि में हुए परिवर्तन के साथ जीवन यापन किया है, यहां तक कि खेती में आने वाले उपकरण हों या सुरक्षा में आने वाले हथियार हों या मनोरंजन के लिए बनाये बाद्य यन्त्रों में भी समय-समय पर बदलाव हुए हैं।

संग्रहालय की स्थापना ब्रज के प्रमुख बारह वनों के अन्तर्गत पंचम वन बहुलावन की पावन भूमि पर की गई है। यह क्षेत्र वृन्दावन से राधाकुण्ड़-गोवर्धन जाने वाले मार्ग पर पूर्णतः ग्रामीण अंचल में अवस्थित है। प्रस्तुत स्थल के चुनाव का महत्वपूर्ण लक्ष्य यह रहा कि ग्रामीण क्षेत्र का सर्वांगीण विकास होना सुनिश्चित किया जा सके। यह स्थल राष्ट्रीय राजमार्ग से मात्र दो किलोमीटर की दूरी पर है। आगे राधाकुण्ड, गोवर्धन, बरसाना, नंदगाँव व कामवन के लिये मार्ग प्रशस्त है अतः भक्ति की सांस्कृतिक भाव भूमि पर सृजित यह अति महत्वपूर्ण स्थल है।

ब्रज लोक कला एवं शिल्प संग्रहालय ने ब्रज संस्कृति में प्राचीन काल से लेकर आज तक के परिवर्तन को दर्शाने का सुफल प्रयास किया है। यहां खेती आदि के प्राचीन उपकरण, सुरक्षा के लिए हथियारों तथा जीवन यापन के उपयोग में आने बाली वस्तुएं बर्तन आदि मनोरंजन के साधनों, वाद्य यन्त्रों के साथ-साथ अनन्त काल से चली आ रही रासलीला की पोशाकों, रास मण्डल तथा ग्रामीण परिवेश के साथ प्राचीन बर्तन पत्थर, लकड़ी, तांवा, पीतल तथा मिट्टी के बर्तनों और प्राचीन आभूषणों के साथ यहां की लुप्त होती कला एवं शिल्प को संग्रहीत किया गया है। इस संग्रहालय को समीप से देख कर ही मानव जीवन की उपयोगी वस्तुओं के बदलाव को समझा जा सकता है।

संग्रहालय में प्रदर्शित संग्रह में ब्रज के लोक जीवन में नित्य प्रति प्रयोग में आने वाली वस्तुऐं और उनके उद्योगों परम्पराओं रीति–रिवाजों तथा सांस्कृतिक उत्सवों व खेल–कूदों और उनकी आस्थाओं व विश्वासों से जुड़ी समस्त सामग्री को एक दृष्टि में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। भविष्य में संग्रहीत सामग्री के विश्लेषण, उसके समाज शास्त्रीय, सौन्दर्य तात्विक, जन जातीय मूल्यों आदि के अध्ययन से गंभीर विश्लेषण करके इनको ऐतिहासिक और भौगोलिक दृष्टि से मूल्यांकन करना संस्थान नितान्त आवश्यक समझता है।

यमुना किनारे रास मण्डल

परंपरागत घर और उपयोगी सामान

गौ खिरक

गोपाल हमारौ ब्रजवास करै, नित उठ धेनु चराय।

वस्तुतः ब्रज संस्कृति का मूल स्रोत गाय है, इसीलिए इस संस्कृति को ग्वाल संस्कृति भी कहा जाता है। गौ खिरक आलोच्य संग्रहालय की एक गैलरी का ही अंग है। अतः यहां ब्रज की ही नस्ल की गौ माताओं के लिए पर्याप्त व्यवस्था की गई है, लोक सृष्टि की जीवन वृत्ति के लिये ब्रह्मा ने सर्वप्रथम गौओं की रचना की थी।

ब्रज लोक कला एवं शिल्प संग्रहालय

का लोकार्पण

14 फरवरी 2024 बुधवार को माननीय श्री शैलजा कान्त मिश्र जी (उपाध्यक्ष) उ० प्र० ब्रज तीर्थ विकास परिषद् द्वारा सम्पन्न हुआ

लोकार्पण समरोह में अध्यक्षता करते हुए उ० प्र० ब्रज तीर्थ विकास परिषद् के उपाध्यक्ष शैलजा कान्त मिश्र जी ने कहा कि आप सभी ब्रजवासियों के कारण यह एक अच्छी शुरूआत है। आप सभी को मानना होगा कि भगवान ने हमें इस कार्य के लिए चैतन्य रूप में व्यवस्थित करने के लिए लगाया है। ब्रज की प्रत्येक बस्तु को, हर वृक्ष को संग्रहीत करने की आवश्यकता है, हमें सत्य निष्ठा के साथ ब्रज के तीर्थत्व की वापसी का आन्दोलन शुरू करना होगा।

इस अवसर पर ब्रज के मूर्धन्य विद्वान श्री श्रीवत्स गोस्वामी जी ने उपस्थित जन समूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि ब्रज लोक कला एवं शिल्प संग्रहालय का संकल्प डॉ0 उमेश चन्द शर्मा ने लिया है जो कि एक सराहनीय कार्य है। ब्रज संस्कृति यदि जीवन है तो संग्रहालय भी जीवन्त है। संग्रहालय मानव जीवन से जुड़ी गतिविधियों का दर्पण होता है। उन्होंने कहा कि ब्रज एक सतत सृष्टि है तभी संवत् 2080 और सन् 2024 में भी ब्रज जीवन्त है। लोक के आधार पर ही शास्त्र की रचना हुई है।

इस अवसर पर डॉ० उमेश चन्द शर्मा ने कहा कि संग्रहालय शिक्षा का अविभाज्य अंग है, शिक्षा और संस्कृति का समन्वय ही सभ्यता का पोषक तत्व है। वस्तुतः संस्कृति जीवन प्रवाह है, यह प्रवाह अनवरत और अविच्छिन्न है। संस्कृतियाँ परस्पर सांस्कृतिक तत्वों का आदान-प्रदान करती हुई अभिनव संस्कृति की रचना करती रहती है। वर्तमान में समूचे विश्व की संस्कृतियाँ एक-दूसरे की पहचान करती दिखाई दे रही हैं।

लोकार्पण समारोह के बाद गणमान्य अतिथियों ने संग्रहालय का अवलोकन किया।

भविष्य की योजनाएं :-

- लोक संगीत व शास्त्रीय संगीत की विधाओं को रिकार्डिंग करने हेतु स्टूडियो की स्थापना करना।
- चित्रकला, मूर्तिकला, संगीत कला के शिक्षण की व्यवस्था करना।
- ब्रज साहित्य और संस्कृति से सम्बन्धित साहित्य के संकलन हेतु वृहत्तर ब्रज के सर्वे कार्य को उच्च स्तर से कराना।
- ब्रज साहित्य और संस्कृति का विविध अंचलों के साथ तुलनात्मक अध्ययन (अनुसंधान कार्य) कराना।
- हस्तलिखित ग्रंथों का संकलन उनकी सुरक्षा व संरक्षा करना।
- कुण्डों की सफाई व जीर्णोद्धार कार्य के प्रति ग्रामीणों को जागरूक करते हुए श्रमदान द्वारा कार्य सम्पन्न कराना।
- पर्यटक एवं लोक संस्कृति से सम्बन्धित अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के सूचना केन्द्र की स्थापना करना।

ब्रज का लोक जीवन बहुत ही जीवन्त है, जिसमें अनेक तत्वों का समावेश है, प्रत्येक तत्व का अपना इतिहास है। मध्य देश में स्थित होने के कारण ब्रज में अनेक सूत्र आकर यहाँ के लोक जीवन को प्रभावित करते हैं। वस्तुत: ब्रज के लोक जीवन की गहराई में बड़े विचित्र और मनोरंजक तत्व छिपे पड़े हैं।

संस्थान द्वारा संस्कृत, हिन्दी, ब्रजभाषा के महत्वपूर्ण व शोध पूर्ण ग्रंथों का प्रकाशन किया गया है। साथ ही समय-समय पर अनेक पत्रक आदि प्रकाशित होते रहते हैं। संस्थान भारतीय संस्कृति और साहित्य की शोध परक मासिक पत्रिका "**ब्रज लोक संपदा**" का नियमित प्रकाशन कर रहा है।

संस्थान को स्वेच्छा से दान देने के लिए

SRI NARHARI SEVA SANSTHAN
CENARA BANK, VRINDAVAN
VIDHYA PEETH CHOURAHA, GANDHI MARG,
VRINDAVAN (MATHURA)
A/C. 2480101002061,
IFSC CODE - CANB0002480

श्री श्री नरहरि सेवा संस्थान
वृन्दावन छटीकरा मोड़ से राधा कुण्ड मार्ग, बहुलावन, मथुरा।
UNDER SECTION 12A
आयकर छूट प्रमाण पत्र- फा. सं. : आ.आ.-1/तक/58-59 (S-672)/80 G/ आगरा/2008-09/ Circular No- 7/2010 के आधार पर वैध है।

ब्रज लोक कला एवं शिल्प संग्रहालय
की तीन आकर्षित करती काष्ठ प्रतिमाएं

ब्रज लोक कला एवं शिल्प संग्रहालय में स्थित तीन दुर्लभ काष्ठ प्रतिमाएं। प्रथम भगवान श्रीकृष्ण की खड़ी प्रतिमा जिसमें कमल दल के ऊपर शेष नाग पर खड़े श्रीकृष्ण को छत्र से सुशोभित करते हुए शेष नाग, दूसरी प्रतिमा बाल कृष्ण अपने पैर का अंगूठा चूसते हुए पालने में झूल रहे हैं। तीसरी बलदाऊ जी की खड़ी प्रतिमा यह भी दुर्लभ है, यह तीनों काष्ठ प्रतिमा ग्रामीण अंचलों से प्राप्त हुई हैं।